चमकी और बुम्बाह का

आकारों का सफर

SESAME WORKSHOP
India

चमकी और बुम्बाह निकल पड़े,
गली के आगे की दुनिया देखने चले।

SESAME WORKSHOP
India

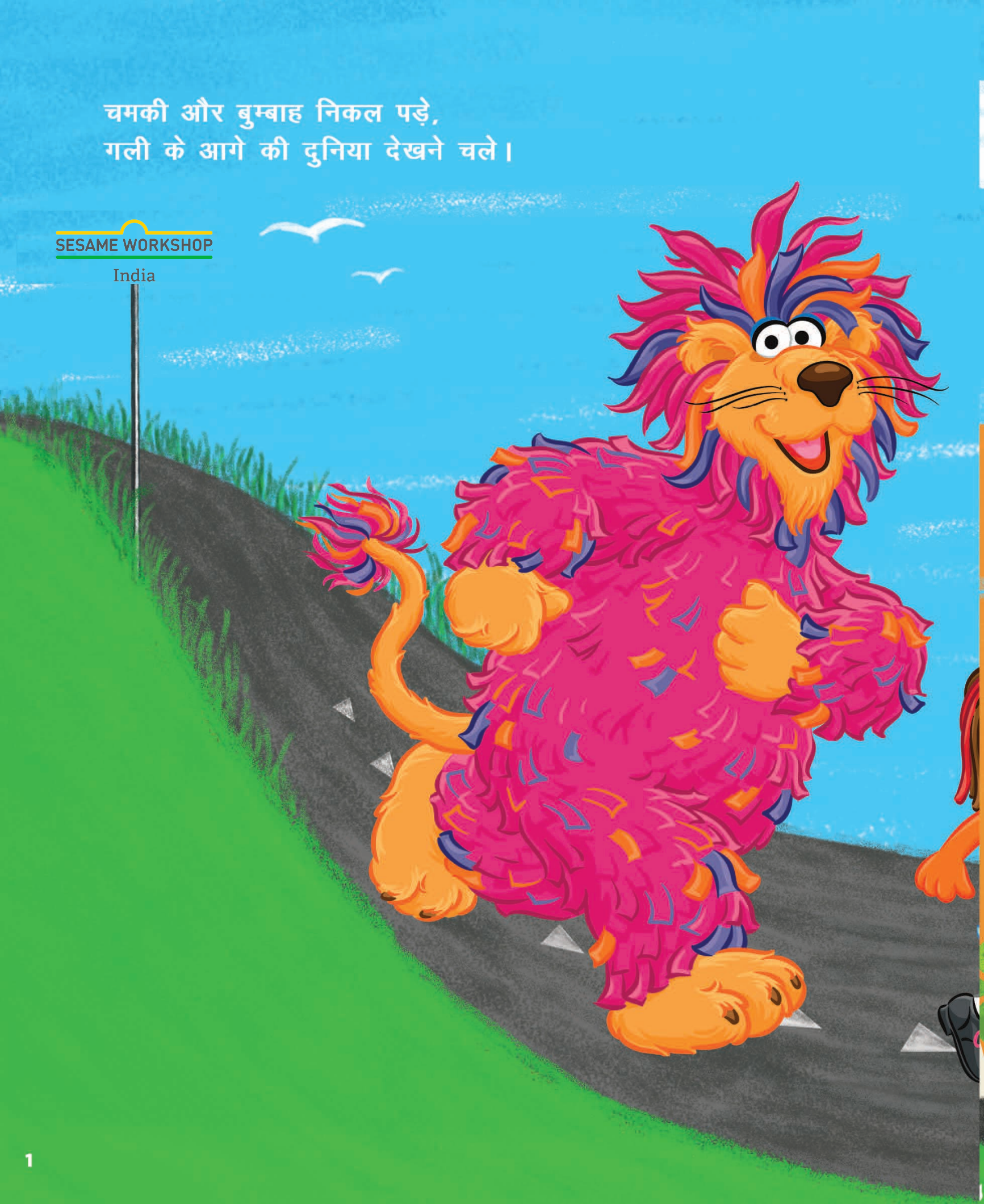

पहुँचे एक नई जगह—नाम था जिसका त्रिकोण प्रदेश।

जहां भी उनकी नज़र जाती
त्रिकोण ही त्रिकोण नज़र आतीं
बुम्बाह बोला, ''क्यों यहां पर सबको त्रिकोण चीज़ें भातीं?''
''क्यों नहीं?'', बोला त्रिकोण प्रदेश का एक निवासी।

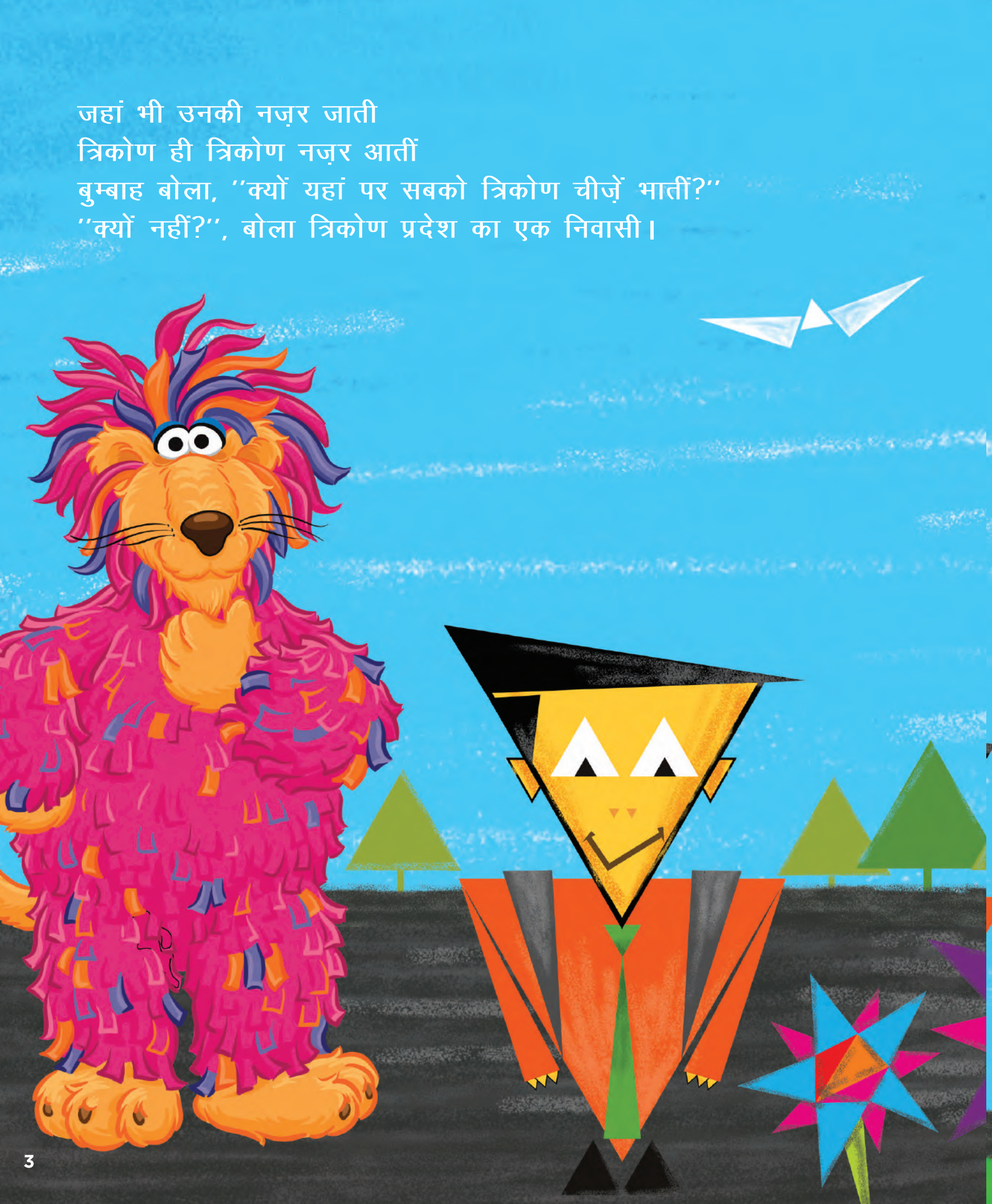

''सबसे अच्छा आकार है त्रिकोण,
तीन कोनों और किनारों से बन जाता है,
त्रिकोण प्रदेश के निवासियों को, त्रिकोण आकार ही भाता है।''

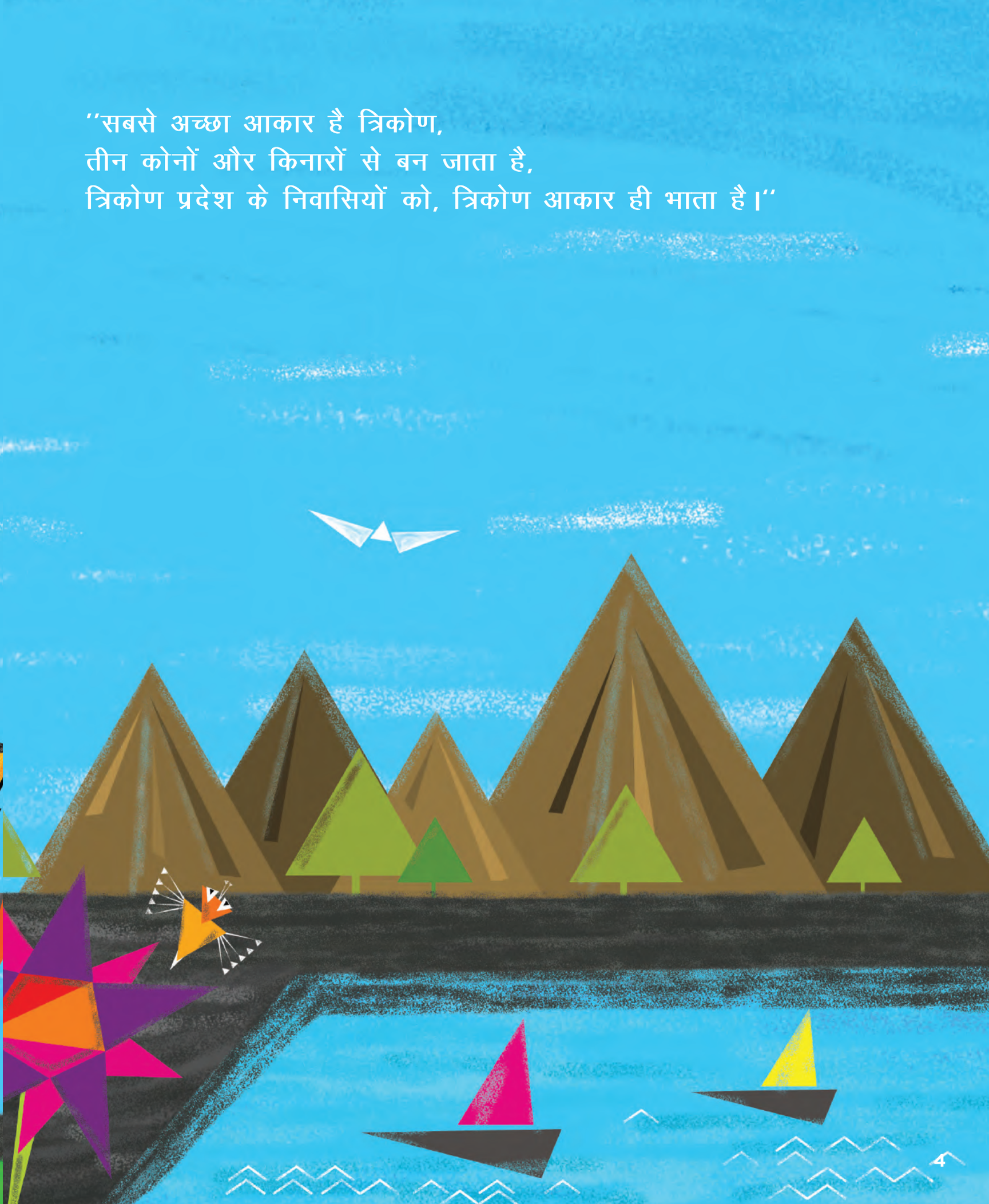

चमकी बोली, ''आओ मेरे साथ, आज मैं तुम्हें दिखाऊँ,
और भी हैं आकार, उनकी कहानी तुम्हें सुनाऊँ।''

त्रिकोण भाई ने अपने दोस्तों को दी विदाई,
सीधी करी अपनी त्रिकोण टाई,
और पकड़ के चमकी का हाथ,
पहुँच गए चौकोर घाट!

यहां पर था सब कुछ चौकोर,
चार भुजाएं थीं चारों ओर,
त्रिकोण भाई बोले, ''क्या यह सचमुच चौकोर घाट है?''

देखो! उस पतंग को देखो! बोले श्रीमान त्रिकोन। दो त्रिकोन को मिला के बनी यह पतंग। यह सुन कर सब रह गये दंग।

''क्या? चौकोर घाट में त्रिकोण,
यह संभव हुआ कैसे? चौकोर और त्रिकोण
बिल्कुल नहीं एक जैसे।''

''जब मिल जाएं इस तरह दो त्रिकोणों के छोर,
तो बन जाता है चौकोर।''
चमकी बोली, ''चौकोर भाई, इस बात को जानिए'',
''आपके अंदर दो त्रिकोण हैं, इन्हें पहचानिए!''

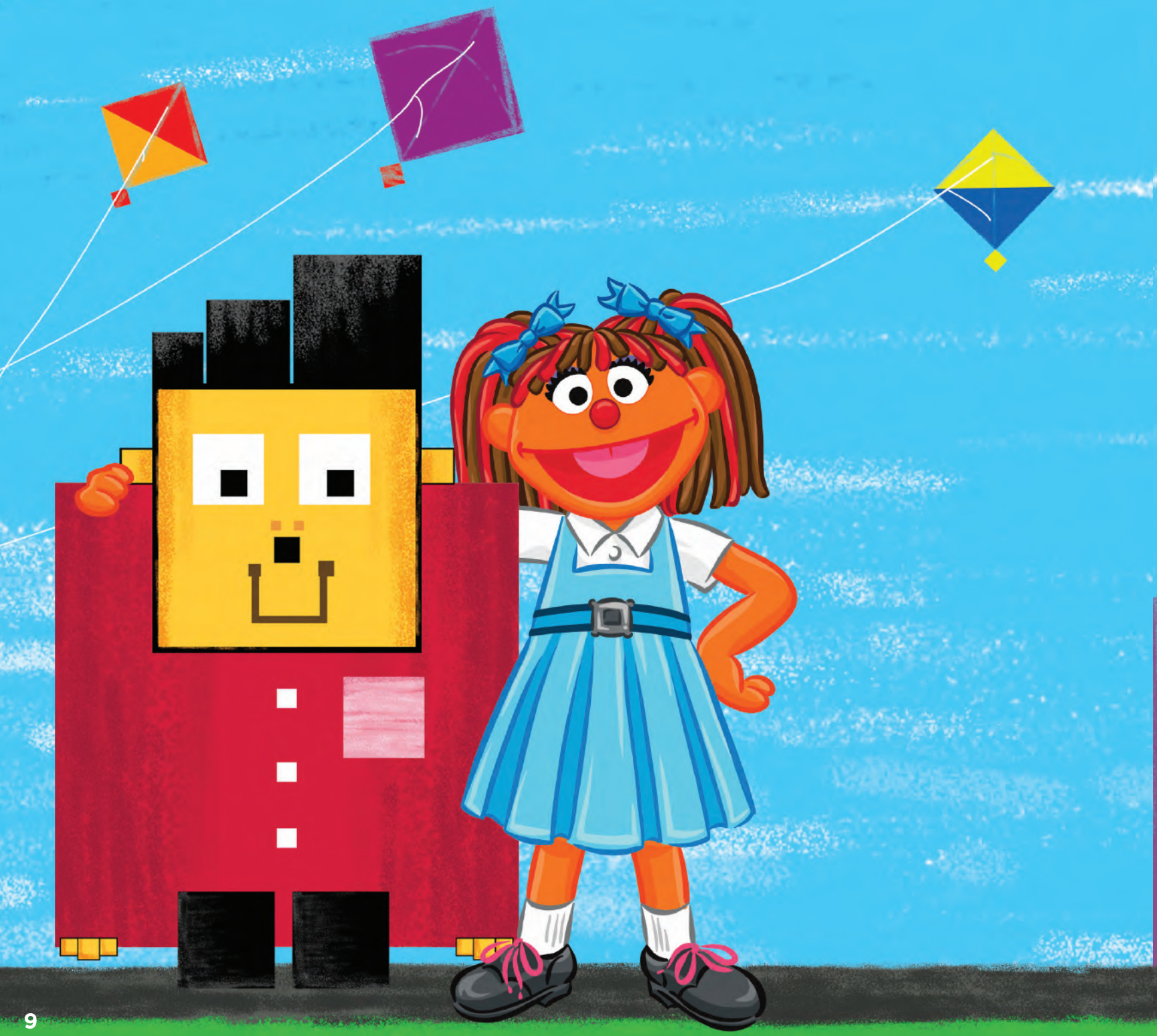

चमकी बोली, ''चौकोर भाई आप हमारे साथ चलें
देखें कि और भी आकार होते हैं भले।''
चौकोर भाई को चमकी का सुझाव पसंद आया,
चमकी और बुम्बाह के साथ आयत गढ़ के लिए कदम बढ़ाया।

आयत गढ़ में थी,
आयतों की भरमार।

चमकी बोली, ''पर इनकी
भी तो हैं भुजाएं चार।
आयत और चौकोर में
अंतर क्या है?''

बुम्बाह ने कहा, ''इस
प्रश्न का उत्तर तुम्हारे
सामने खड़ा है।''

दोनों की हैं भुजाएं चार,
लेकिन एक–दूसरे से भिन्न हैं ये आकार!
चौकोर की चारों भुजाएं बराबर,
आयत खुश है, दो लंबी और दो छोटी पाकर।

अरे वाह! चौकोर ने आयत को गले लगाया,
चार भुजाओं वाले हाथ से हाथ मिलाया,
और बोला, ''हम में कुछ समान है, और कुछ अलग,
लेकिन मुझे तुम्हारा आकार बहुत पसंद है।''

त्रिकोण भाई ने कहा, ''बहुत बढ़िया!''
''चमकी का सपना हो गया है साकार,
आज यहां पर मिल गए हैं, सारे आकार!''

बुम्बाह बोला, ''नहीं, यह दोस्ती अधूरी है,
हमें एक और आकार से मिलना ज़रूरी है।''

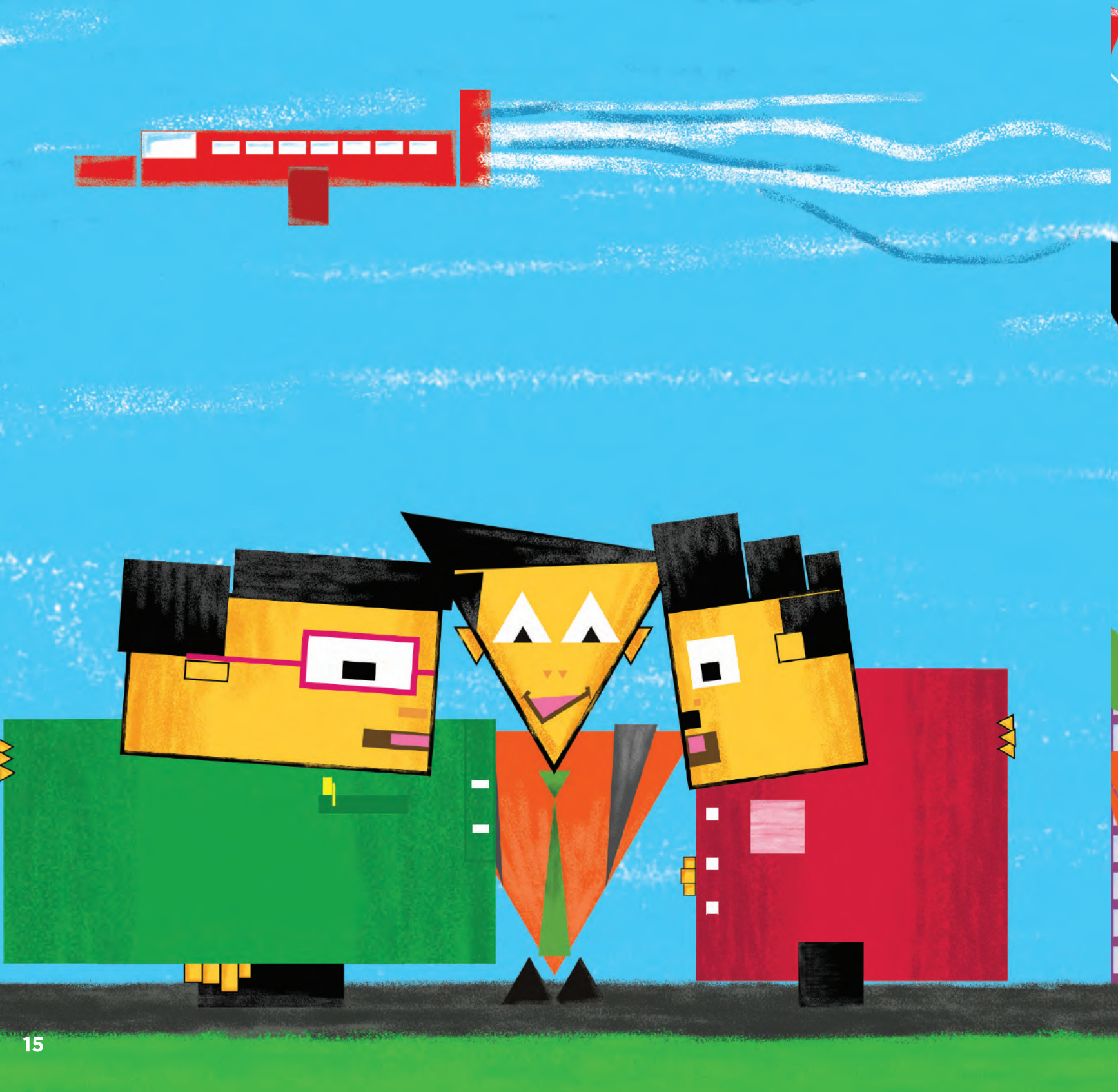

आकारों ने मिलकर दिमाग लगाया
सबको बुम्बाह का सुझााव पसंद आया
और लेकर एक गोल डगर,
पहुँच गए गोल नगर।

गोल
नगर

त्रिकोण भाई को गोल नगर बहुत पसंद आया,
गोल पहियों पर घूमने का अंदाज़ बहुत भाया।
''मन करता है कि मैं भी गोलाकार बन जाऊँ,
गोल पहिये पाकर सारी दुनिया घूम के आऊँ।''

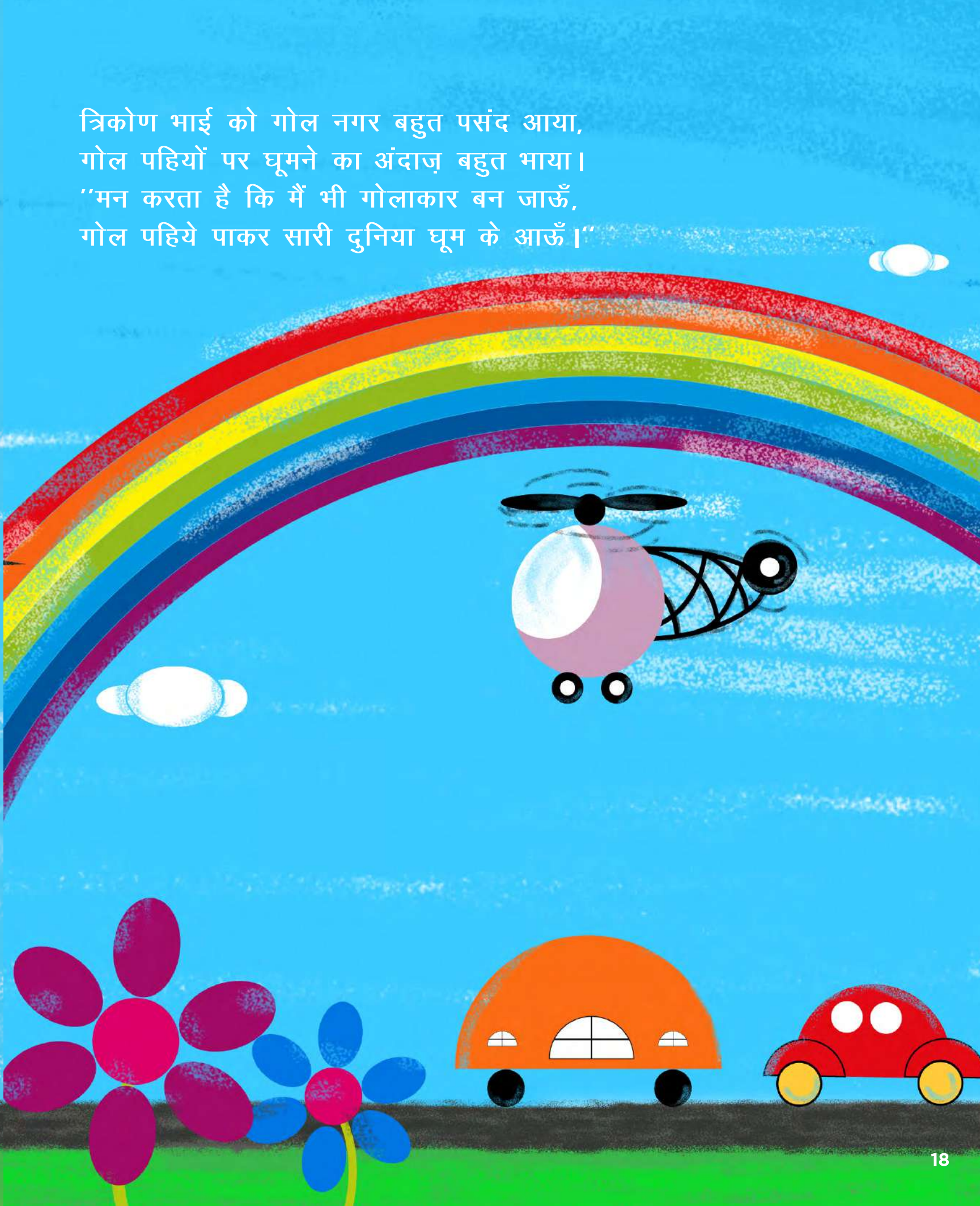

बाकी आकर बोले,
''पहिये सचमुच हैं लाजवाब,
लेकिन हम सभी में है कुछ न कुछ ख़ास,
क्यों न हम सब एक साथ मिल जाएँ?
और मिलकर एक नई दुनिया बनाएँ?''

क्या तुम बता सकते हो, सबने मिल–जुलकर क्या बनाया?

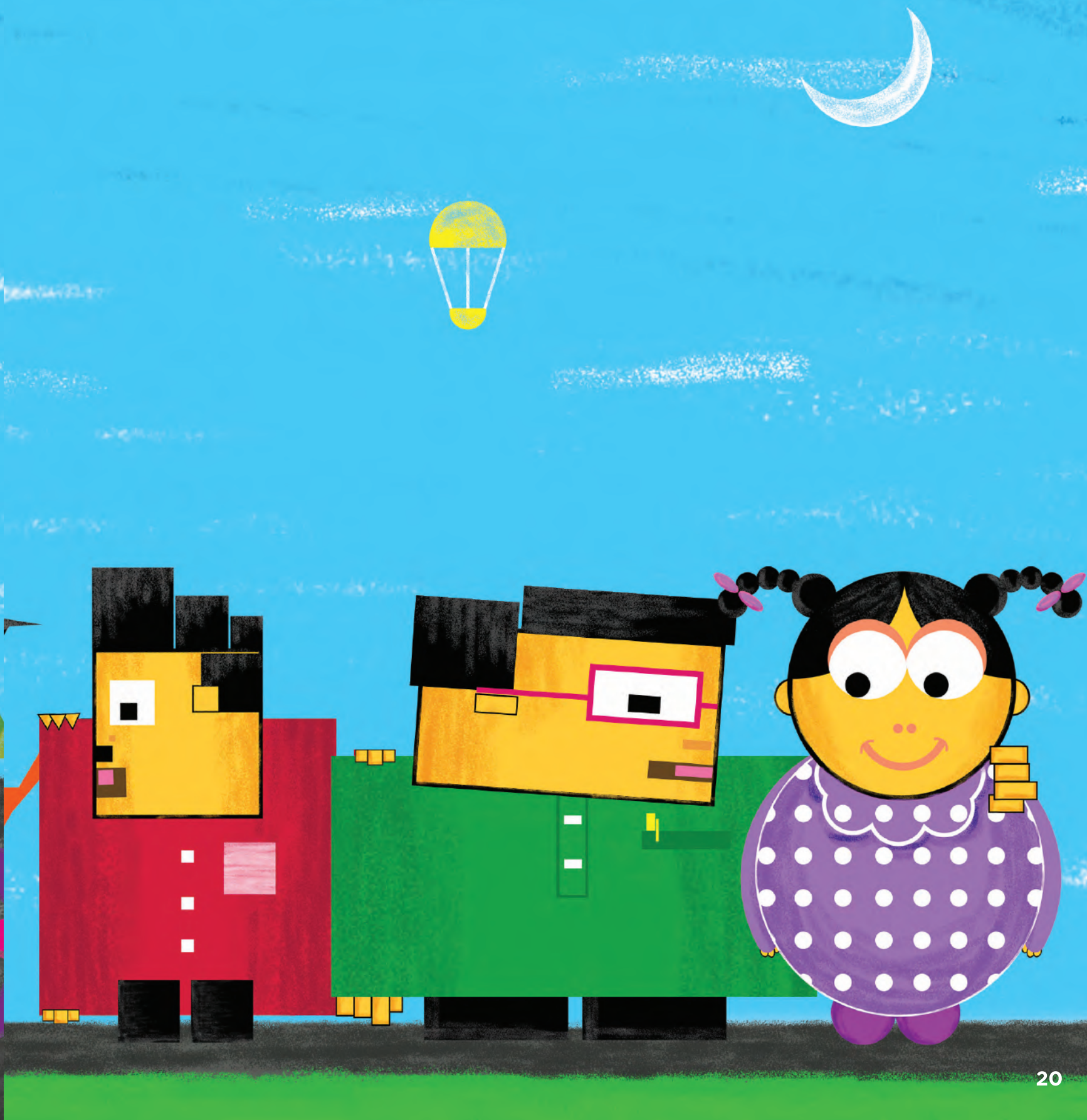

आकारों

की दुनिया!

SESAME WORKSHOP™

India

www.sesameworkshopindia.org

SESAME STREET, SESAME STREET street sign, GALLI GALLI SIM SIM, design, associated characters, trademarks and design elements are trademarks owned and licensed by Sesame Workshop IUSAJ. ©2020 Sesame Workshop. All rights reserved including rights of reproduction in whole, in part or in any form.